CHAPTER 1

(क) देवसेना का गीत

(ख) कार्नेलिया का गीत

PAGE 5 , प्रश्न और अभ्यास

(क) देवसेना का गीत

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:1
"मैंने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई"- पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

<u>उत्तर</u> प्रस्तुत पंक्ति देवसेना की पीड़ा को दर्शाती है। देवसेना स्कंदगुप्त से प्रेम करती है । स्कंदगुप्त को देवसेना से प्रेम नहीं है। इस बात का ज्ञान होने के बाद देवसेना दुखी होकर स्कंदगुप्त को छोड़कर चली जाती है । उसे भरम था की स्कंदगुप्त भी उसे प्रेम करते है और इसी भरम में देवसेना अपना सब कुछ लुटाकर स्कंदगुप्त से प्रेम करती है । इसीलिए वह कहती है कि मैंने प्रेम के भ्रम में अपनी जीवन भर की

अभिलाषाओं रूपी भिक्षा को लुटा दिया है। मेरे जीवन में अब कोई अभिलाषा नहीं है । मनुष्य जीवन तभी सार्थक है जब तक उसके जीवन में कोई उमनग या अभिलाषा हो । जब यह दोनों नहीं होते तो मनुष्य का जीवन निरर्थक हो जाता है । देवसेना के जीवन में अब यह दोनों ही नहीं है।

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:2

कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

<u>उत्तर-</u> किसी भी मनुष्य के जीवन में 'आशा' बहुत ही महत्वपूर्ण है। आशा से मनुष्य को शक्ति मिलती है । परन्तु यदि किसी मनुष्य अत्यधिक आशा रखता है तो वह उसे बलवा भी कर देती है। जैसे देवसेना ने स्कंदगुप्त के प्रेम की आशा में उसके साथ अपने जीवन के स्वर्णिम स्वप्न देखे थे । प्रेम की आशा में वह इतना डूब चुकी थी की उसे वास्तविकता का ज्ञान ही नहीं था। कवि ने इसीलिए आशा को बावली कहा है।

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:3

"मैंने निज दुर्बल..... होड़ लगाई" इन पंक्तियों में 'दुर्बल पद बल' और 'हारी होड़' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: 'दुर्बल पद बल' में निहित व्यंजना देवसेना के बल की क्षमता को प्रदर्शित करता है।
'होड़ लगाई' में निहित व्यंजना देवसेना की प्रेम के प्रति कर्तव्यनिष्ठा को प्रदर्शित करता है।

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:4
काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-
(क) श्रमित स्वप्न की मधुमाया ..... तान उठाई।
(ख) लौटा लो ..... लाज गँवाई।

उत्तर:

(क) कविता के इस अंश की विशेषता ये है की इसमें बिम्ब बिखरा पड़ा है। देवसेना स्मृति में खोयी हुई है। उसे अपने प्रेम के लिए किये गए असफल प्रयास स्मरित हो जाते है। वह चौंक जाती है क्योंकि अचानक से उसे उसी प्रेम के स्वर सुनाई देने लगे है। इसमें विहग राग

का उल्लेख है। इसे मध्य-रात्रि में गाया जाता है। कवि ने स्वप्न को श्रम के रूप में कहकर गहरी व्यंजना व्यक्त की है। स्वप्न को मानवी रूप में दर्शाया गया है। इन पंक्तियों में देवसेना की पीड़ा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

(ख) इस काव्यांश में देवसेना के हतोस्ताहित मानसिक स्थिति का पता चलता है जो निराशा से भरी हुयी है। स्कंदगुप्त के लिए उसके ह्रदय में जो प्रेम है वह उसे प्रताड़ित कर रहा है।

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:5

देवसेना की हार या निराशा के क्या कारण हैं?

उत्तर: राजकुमारी देवसेना को सम्राट स्कंदगुप्त से प्यार था। उसने अपने प्यार को पाने के लिए बहुत कोशिश की। लेकिन इसे पाने के उसके सारे प्रयास असफल साबित हुए। यह उसके लिए बहुत निराशा का कारण था। पिता की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी और भाई भी वीरगति को प्राप्त हो गया था। वह संसार में बंधू-बांधवों से मुक्त हो चुकी थी तथा भिक्षा मांगकर

गुज़ारा करती थी। उसे प्रेम का ही सहारा था। परन्तु ने भी उसे द्विकार नहीं किया।

PAGE 6

(ख) कार्नेलिया का गीत

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:1

कार्नेलिया का गीत कविता में प्रसाद ने भारत की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर: प्रसाद जी ने भारत की इन विशेषताओं की ओर संकेत किया है

1.भारत पर सूर्य की किरण सबसे पहले पहुँचती है ।

2.यहाँ पर किसी अपरिचित व्यक्ति को भी प्रेम पूर्वक रखा जाता है ।

3.यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत है ।

4.यहाँ के लोग दया ,करुणा और सहानुभूति भावनाओं से भरे हुए हैं ।

5.भारत की संस्कृति महान है ।

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:2

'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखों के बादल' में क्या विशेष अर्थ व्यंजित होता है?

उत्तर: अप्रवासी लोगो का विशेष अर्थ 'उड़ते खग' में व्यंजित है। कवी के अनुसार भारत वो देश है जहां पर देश के बहार पक्षी आकर आश्रय लेते है। कवी का अर्थ यह है की भारत के लोगो बहार के लोगों को आश्रय देते है। भारत में आश्रय लेने वाले लोंगो को यहाँ शांति भी मिलती है। यही भारत की विशेषता है।

एक विशेष अर्थ देती है कि भारतीय लोग अनजान लोगों के दुःख में भी दुखी होते हैं। उनका दुःख आँसुओं के रूप में सामने आता है।

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:3

काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

हेम कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे

मदिर ऊँघते रहते सब-जगकर रजनी भर तारा।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति में 'उषा' को मानवकृत और एक पानी भरती महिला के रूप में चित्रित किया गया है। इन पंक्तियों में हर जगह भोर की सुंदरता का वर्णन है। कवि के अनुसार भोर रुपी स्त्री अपने सूर्य रुपी सुनहरे घड़े से आकाश रुपी कुंए से मंगल पानी भरकर लोगों के जीवन में सुख के रूप में लुढका जाती है। 'तारे ऊँघने लगते है' का अर्थ यह है की सूर्य निकल आया है अब तारे भी छुपने लगे है।

1.उषा तथा तारे का मानवीकरण करने के कारण मानवीकरण अलंकार है **।**

2.काव्यांश में गेयता का गुण विद्यमान है **।** अर्थात इसे गाया जा सकता है **।**

3.हेम कुम्भ में रूपक अलंकार है **।**

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:4

'जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा'- पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति का तात्पर्य यह है की भारत ऐसा देश है जहां पे उन अजनबी लोगो को भी आश्रय मिल जाता है

जिनका अपना कोई आश्रय नहीं है। कवी के अनुसार भारत ह्रदय बहोत ही विशाल है। इस देश के लोग सिर्फ पक्षियों को आश्रय नहीं देते अपितु बाहर से आये अनजान लोगो को भी आश्रय देते है।

12:1:1:प्रश्न और अभ्यास:5

प्रसाद शब्दों के सटीक प्रयोग से भावाभिव्यक्ति को मार्मिक बनाने में कैसे कुशल हैं? कविता से उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।

उत्तर: प्रसाद अपने भावों की अभिव्यक्ति भी शब्दों को बहुत ही मार्मिक ढंग से करते हैं। वह शब्दों से लता है जैसे कि एक कठपुतली को पिरोया और पिरोया जाता है। उनकी भावुक अभिव्यक्ति इतनी मार्मिक है कि दिल हिल जाता है। उदाहरण के लिए देखें-

(क) आह! वेदना मिली विदाई!
मैंने भ्रम-वश जीवन संचित,
मधुकिरयों की भीख लुटाई।

(ख) लगी सतृष्णा दीठ थी सबकी,
रही बचाए फिरती कबकी।
मेरी आशा आह! बावली,
तूने खो दी सकल कमाई।
इसी तरह तीसरी पंक्ति में देखिए-

(ग) लौटा लो यह अपनी थाती
मेरी करुणा हा-हा खाती
विश्व!न सँभलेगी यह मुझसे
इससे मन की लाज गँवाई।
इन पंक्तियों में कवि ने बड़ी मार्मिकता से देवसेना के दिल की भावनाओं को उकेरा है। यह देवसेना के भीतर व्याप्त पीड़ा और दुख को दर्शाता है।